अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : दसवीं – जैन सिद्धान्त प्रभाकर– उत्तरार्द्ध (परीक्षा 12 जुलाई, 2015)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	7	कुल योग
प्राप्तांक								
पूर्णांक	10	10	10	10	24	24	12	100
पुनः जाँच								

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए : - 10x1 = (10)

(a) प्राकृत भाषा में पुरुष होते हैं -

(क) 2 (ख) 3

(ग) 1 (घ) 5 ( )

(b) 'जिण' शब्द का तृतीया विभक्ति का रूप है -

(क) जिणेण (ख) जिणस्स

(ग) जिणे (घ) जिणं ( )

(c) 'लह' क्रिया का अर्थ है -

(क) चाहना (ख) देखना

(ग) प्राप्त करना (घ) पीना ( )

(d) पहली नरक के नरकावास हैं -

(क) 30 लाख (ख) 20 लाख

(ग) 50 लाख (घ) 5 लाख ( )

(e) छठी नरक में पाथडे हैं -

(क) 5 (ख) 7

(ग) 9 (घ) 3 ( )

(f) तीसरी नरक की उत्कृष्ट स्थिति है -

(क) 7 सागरोपम (ख) 10 सागरोपम

(ग) 1 सागरोपम (घ) 3 सागरोपम ( )

(g) तेउकाय में उत्पन्न हुआ जीव उत्कृष्ट काल तक रहता है -

(क) संख्यात (ख) असंख्यात

(ग) अनन्त (घ) अनादि ( )

(h) एक सागरोपम होता है -

(क) हजार करोड़ वर्ष (ख) 10 कोड़ाकोड़ी पल्योपम

(ग) असंख्यात पल्योपम (घ) संख्यात वर्षों का ( )

(i) नवगैवेयक में सभी देव होते हैं -

(क) अनीक (ख) सामानिक

(ग) अहमिन्द्र (घ) आत्मरक्षक ( )

(j) 12 वैमानिक देवों के इन्द्र होते हैं -

(क) 12 (ख) 8

(ग) 9 (घ) 10 ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1=(10)**

(a) द्रीन्द्रियकाय में उत्पन्न जीव अधिकतम असंख्यात काल तक वहाँ रहता है। ( )

(b) अकलेवर श्रेणी का अर्थ क्षपक श्रेणी होता है। ( )

(c) कम से कम बीस वर्ष की दीक्षापर्याय वाला पर्यायस्थविर माना जाता है। ( )

(d) सुख-विपाक सूत्र के अष्टम अध्ययन का नाम महाबल है। ( )

(e) ग्रैवेयकों के पहले तक के देव कल्पातीत कहलाते हैं। ( )

(f) शब्द पुद्गल का मूल गुण नहीं है। ( )

(g) गुण स्वयं निर्गुण होते हैं। ( )

(h) नारकी का एक नेरिया दूसरे नैरयिक से स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है। ( )

(i) एक पर्याय से दूसरी पर्याय में जाने वाला द्रव्य है। ( )

(j) हेमचन्द्राचार्य ने 'प्राकृत-प्रकाश' की रचना की। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1=(10)**

(a) मैं एक ही काय में 'अनन्तकाल तक रहता हूँ । .....

(b) मैं जल में रहते हुए जल से लिप्त नहीं होता हूँ। .....

(c मैं जमाली की तरह भगवान के दर्शनार्थ रथ से निकला था। .....

(d) मैंने सुदत्त अणगार को शुद्ध आहार दान से संसार परित्त किया था। .....

(e) मेरी रानी का नाम सुभद्रा देवी था। . .....

(f) मेरे अन्दर 5 नरकावास हैं। .....

(g) मेरी स्थिति 42 हजार वर्ष की है। .....

(h) मेरे कारण जीव ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शुद्र होता है। .....

(i) मेरा अर्थ आत्मघात नहीं है। .....

(j) मैं अलग होने के अर्थ में 'प्रयुक्त होता हूँ। .....

प्र.4 प्रश्न एवं उत्तर दोनों क्रम में नहीं दिए गए हैं, आप उत्तर की जोड़ी मिलाकर सही उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए - **10x1=(10)**

(a)	दसद्धवण्णे	-	आधा पल्योयम	.....
(b)	परिणिव्वुडे	-	असंख्यात	.....
(c)	लंबमाणए	-	पांच वर्ण	.....
(d)	कंटगापहं	-	उपशान्त	.....
(e)	एक जीव के प्रदेश	-	सुधर्म देवलोक	.....
(f)	नक्षत्र	-	लटकते हुए	.....
(g)	2 सागरोपम	-	72 हजार वर्ष	.....
(h)	अप्पा कत्ता विकत्ता	-	सौरसेनी	.....
(i)	दिगम्बर साहित्य	-	उत्तराध्ययन सूत्र	.....
(j)	खेचर	-	कंटकाकीर्णमार्ग	.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्य में दीजिए - **12x2=24**

(a) प्राकृत वर्णमाला में कौनसे स्वर होते हैं?

.....

.....

.....

(b) सकर्मक क्रिया किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

(c) संथारा मरण व आत्महत्या दोनों समान दिखते हैं तो भी दोनों में क्या अन्तर है?

.....

.....

.....

(d) कर्म किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

(e) परिग्रह का स्वरूप क्या बताया है?

.....

.....

.....

(f) चार स्थावरों को अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थान पतित क्यों कहा गया है?

.....

.....

.....

(g) भेदादणुः का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

(h) नाणोः का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

(i) सूर्य विमानवासी देवों की जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

.....

.....

.....

(j) कौनसी चार बातों में देवों में हीनता होती है?

.....

.....

.....

(k) जीवियं चयई का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

(l) सुखविपाक के कितने अध्ययनों में वर्णित महापुरुष मोक्ष में पधारे?

.....

.....

.....

प्र. 6- निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में दीजिए - (कोई 8) 8x3=24

(a) सुपात्र दान देने में कैसा हर्ष होना चाहिए ?

.....

.....

.....

.....

.....

(b) 5 दिव्यों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(C) चार निकाय के देवों के उत्पत्ति स्थान कहाँ-कहाँ हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

(d) नित्यत्व और अवस्थित में क्या अन्तर है?

.....

.....

.....

.....

.....

(e) प्रदेश और परमाणु में क्या अन्तर है?

.....

.....

.....

.....

.....

(f) सत् किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

(g) संख्यात गुण हीन- अधिक किसे कहते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

(h) जघन्य स्थिति वाले पृथ्वीकाय के जीव की जघन्य स्थिति वाले पृथ्वीकाय से तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(i) जघन्य अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय की जघन्य अवगाहना वाले द्वीन्द्रिय से तुलना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

प्र.7- निम्नांकित के हिन्दी भावार्थ लिखिए (कोई 4) 4x3 = 12

(a) इइ इत्तरियम्मि आउए, जीवियए बहुपच्चवायए।

विहुणाहि रयं पुरेकडं, समयं गोयम! मा पमायए। ।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) एवं भवसंसारे, संसरइ सुहासुहेहिं कम्मेहिं।

जीवो पमायबहुलो, समयं गोयम ! मा पमायए।।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) अरई गंडं विसूइया, आयंका विविहा फुसंति ते।

विहडइ विद्धंसइ ते सरीरयं, समयं गोयम ! मा पमायए।।

.....

.....

.....

.....

.....

(d) न हु जिणे अज्ज दिस्सई, बहुमए दिस्मई मग्गदेसिए।

संपइ नेयाउए पहे, समयं गोयम ! मा पमायए।।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) तित्थयरो सव्वत्थ गच्छइ। वीरो लेहं लिहइ। अहं पुप्फं पासमि। इन तीनों का हिन्दी में अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....